आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ --------- Date: 02-08-14

आज ज्ञान सागर बाप ने हमें देही-अभिमानी और देह-अभिमानी के बीच में क्या अन्तर हैं उसको स्पष्ट करते हुए कहा, मीठे बच्चे - विनाशी शरीरों से प्यार न करके अविनाशी बाप से प्यार करो तो रोने से छूट जायेंगे.

बाबा ने आज सारी मुरली में जितनी बार देही-अभिमानी और देह-अभिमानी के अन्तर को अलग-अलग तरीके से स्पष्ट किया हैं, उसे ही लिखकर या इसको ही बार-बार पढ़कर हमारी देही-अभिमानी स्थिति बनाने का सहज पुरुषार्थ करेंगे.

पहले है देही-अभिमानी की पाईन्ट और बाद में है देह-अभिमानी की पाईन्ट.

- यह तो बच्चे ही जानते है कि आत्मा अविनाशी है और बाप भी अविनाशी है. जब कि सारी दुनिया विनाशी है, इस दुनिया कि हर एक चीज विनाशी है, यह शरीर भी विनाशी है.

- अविनाशी आत्मा का अविनाशी आत्मा से प्यार होना चाहिए, इसे ही राइटियस प्यार कहते हैं. अविनाशी आत्मा का विनाशी शरीर से मोह रखना अनराइटियस प्यार है.

- अभी तुम अपने को अविनाशी आत्मा समझते हो तो रोने की बात नहीं क्योंकि आत्म-अभिमानी हैं. बाप अब तुम बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाते है. देह-अभिमानी होने से रोना होता है. विनाशी शरीर के पिछाड़ी रोते है.

- बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो. तुम अविनाशी बाप के बच्चे अविनाशी आत्मा हो, तुमको रोने की दरकार नहीं. आत्मा एक शरीर छोड़ जाए दूसरा पार्ट बजाती है. ये तो खेल है. तुम शरीर में ममत्व क्यों रखते हो.

- देह सहित देह के सब सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़ो. अपने को अविनाशी आत्मा समझो. आत्मा कभी मरती नहीं. गायन भी है जो रोया सो खोया.

- आत्मा-अभिमानी बनने से ही लायक बन जायेंगे. तो बाप आकर देह-अभिमानी से आत्मा-अभिमानी बनाते हैं. बाप कहते है तुम कैसे भूले हुए हो. जन्म-जन्मांतर (लास्ट 63 जन्म) तुमको देह-अभिमान के कारण रोना पड़ा है.

- वह है हँसने की दुनिया, यह है रोने वाली दुनिया.

- वह है सुख की दुनिया, यह है दुख की दुनिया.

- अविनाशी बाप की अविनाशी बच्चों को शिक्षा मिलती है. वह देह-अभिमानी हैं तो देह को ही देख शिक्षा देते हैं. तो देह की याद आने से रोते हैं. देखते भी हैं शरीर खत्म हो गया फिर उनको याद करने से क्या फायदा. मिट्टी को याद किया जाता है क्या?

- अभी तुम अपने को आत्मा समझ, दूसरे को भी आत्मा देखते हो तो जरा भी दुख नहीं होता. आत्मा जब दूसरे के शरीर समझ उसे मोह रखती है तो दुखी होती हैं.

- सतयुग है फस्टकलास तो सब चीज़ें फस्टक्लास मिलती है. कलियुग में हे सब चीज़ें थर्डक्लास.

- अभी तुम आत्मा-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस कर बाप की श्रीमत् से स्वर्ग (सतयुग-त्रेता) के मालिक बनते हो. आधाकल्प तुमने देह-अभिमानी रहकर रावण की मत पर चलने से तुम्हारी क्या हालत होती है.

- ईश्वरीय लॉटरी और असुरी लॉटरी में कितना फर्क होता हैं. ॐ शांति.